दैनिक ट्रिब्यून 19-8-98

बाबू मूलचंद जैन को भुला नहीं सकेगा हरियाणा

20.8.98

देश में अनेक राजनेता, स्वतंत्रता सेनानी व समाज के अन्य बुद्धिजीवियों ने गांधीवादी विचारधारा पर चलने का मन बनाया परंतु इनमें से इस विचारधारा के सच्चे अनुयायी बाबू मूलचंद जैन को न केवल हरियाणा अपितु समस्त राष्ट्र सदैव याद रखेगा। 20 अगस्त 1915 को गोहाना उपमंडल के गांव सिकंदरपुर माजरा में एक निर्धन महाजन परिवार में लाला मुरारी लाल जैन के परिवार में जन्मे बाबू मूलचंद जैन ने गांव के स्कूल से प्राथमिक शिक्षा प्रथम स्थान लेकर उत्तीर्ण की तथा छात्रवृत्ति लेकर परिवार का गौरव बढ़ाया। वर्ष 1931 में गोहाना हाई स्कूल से प्रथम स्थान लेकर गांव का गौरव बढ़ाया।

इन्हें देशभक्ति का जज्बा बचपन से ही था। वर्ष 1931 में इस जज्बे को हवा उस समय मिली जब देश के सच्चे सपूतों सरदार भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को ब्रिटिश

आज जयंती पर विशेष

सरकार ने फांसी की सजा दे दी। इससे देश में कोहराम मच गया। देश के कोने-कोने में इसके विरोध में जलूस निकाले गए। इस कुहासे से अत्यधिक प्रभावित होकर बाबू मूलचन्द जैन ने गोहाना में निकाले गए जलूस में बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा गोरी सरकार के विरुद्ध जमकर नारे लगाए।

कुशाग्र बुद्धि के धनी इस व्यक्तित्व ने 1936 में स्नातक परीक्षा में पंजाब विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान लेकर स्वर्ण पदक अर्जित किया। वर्ष 1932 में इनकी शादी अनपढ़ कुमारी शरबती जैन से हुई। मगर श्री जैन ने इन्हें हिम्मत कर अक्षर ज्ञान ही नहीं कराया बल्कि हिन्दी की परीक्षाएं भी पास करवाई। अपनी गौरवमयी सभ्यता व संस्कृति की प्रतीक श्रीमती जैन बोलचाल व रहन-सहन के हर क्षेत्र में किसी पढ़े लिखे से कम नहीं मानी गईं। पढ़ाई पूरी करने के बाद इस नौजवान ने गोहाना में अपनी वकालत का श्रीगणेश किया। वे वतन की आजादी की लड़ाई में भी भाग लेने लगे।

शुरू से गांधी जी के विचारों से प्रभावित कांग्रेसी श्री जैन ने 1940 में महात्मा गांधी द्वारा छेड़े गए सत्याग्रह में शामिल होने की अनुमति लेकर अपने पैतृक गांव सिकन्दरपुर माजरा में ग्रामीणों की हाजिरी में 6 मार्च 1941 को अपनी गिरफ्तारी दी। एक वर्ष की सज़ा काटने के बाद जनवरी 1942 को वे करनाल में रहने लगे। अगस्त में भारत की आजादी के लिए छेड़े गए अन्तिम आन्दोलन में भाग लेने के लिए उन्हें करनाल की कचहरी से गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया।

1952 में प्रथम चुनाव में श्री जैन ने समालखा सीट से चुनाव लड़ा तथा कांग्रेसी विधायक बने। 1956 में श्री जैन को प्रताप सिंह कैरों मंत्रिमंडल में लोक निर्माण व आबकारी एवं कराधान मंत्री बनाया गया। 1957 में श्री जैन कैथल लोकसभा से एक लाख से ज्यादा मतों से विजयी रहे।

1990 में महम उपचुनाव में श्री जैन ने निर्भयता व दिलेरी से आनंद सिंह दांगी का साथ दिया। 1989 में योजना बोर्ड उपाध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर श्री जैन ने अपने पैतृक गांव सिकन्दरपुर माजरा में अपने पिता के नाम पर लाला मुरारी लाल धर्मार्थ ट्रस्ट का गठन किया।

12 सितम्बर 1997 को करनाल स्थित अपने निवास पर सुबह आठ बजे अलविदा कहने वाले अदम्य प्रतिभा के धनी बाबू मूलचन्द जैन पंचलीन में विलुप्त हो गये। बाबू मूलचन्द जैन की प्रतिमा का अनावरण करने देश के उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी व महिला दक्षता समिति की अध्यक्षा श्रीमती कृष्णकांत 20 अगस्त को सिकन्दरपुर माजरा आ रही हैं।

–आर.डी. सपरा

downloaded from moolchandjain.org